गायत्री साधना से आपत्तियों का निवारण

प्रस्तुत पृष्ट पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित पुस्तक "गायत्री ही कामधेनु है" से एक्सट्रेक्ट किये गए हैं।

गायत्री-साधना से आपत्तियों का निवारण

विपरीत परिस्थितियों का प्रवाह बड़ा प्रबल होता है। उसके थपेड़े में जो फँस गया, वह विपत्ति की ओर बहता ही जाता है। बीमारी, धन हानि, मृत्यु, मुकदमा, शत्रुता, बेकारी, गृह-कलह, विवाह, कारज आदि की शृंखला जब चल पड़ती है, तो मनुष्य हैरान हो जाता है। कहावत है कि विपत्ति अकेली नहीं आती, वह हमेशा अपने बाल-बच्चे साथ लाती है। एक मुसीबत आने पर उसकी साथिन और भी कई कठिनाइयाँ भी साथ आती हैं, चारों ओर से घिरा हुआ मनुष्य अपने चक्रव्यूह में फँसा-सा अनुभव करता है। ऐसे विकट समय में जो लोग निराशा, चिंता, भय, निरुत्साह, घबराहट, किंकर्त्तव्यविमूढ़ता में पड़कर हाथ-पाँव चलाना छोड़ देते हैं, रोने-कलपने में लगे रहते हैं, वे अधिक समय तक और अधिक मात्रा में कष्ट भोगते हैं।

विपत्ति और विपरीत परिस्थितियों की धारा से त्राण पाने के लिए साहस, विवेक और प्रयत्न की आवश्यकता है। इस चार कोने वाली नाव पर चढ़कर ही संकट की नदी का पार करना सुगम होता है। गायत्री की साधना आपत्ति के समय इन चार तत्त्वों को मनुष्य के अंत:करण में विशेष रूप से प्रोत्साहित करती है, जिससे वह ऐसा ठीक मार्ग खोजने में सफल हो जाता है जो उसे विपत्ति से पार लगा दे।

आपत्तियों में फँसे हुए अनेक व्यक्ति गायत्री की कृपा से किस प्रकार पार उतरे उनके कुछ उदाहरण जानकारी में इस प्रकार हैं—

घाटकोपर बंबई (मुंबई) के श्री आर० बी० वेद गायत्री की कृपा से घोर सांप्रदायिक दंगों के दिनों में मुसलिम बस्तियों में होकर निर्भय निकलते रहते थे। उनकी पुत्री को एक बार भयंकर हैजा हुआ वह भी उसी अनुग्रह से शांत हुआ। एक महत्त्वपूर्ण मुकदमा का उनकी अनुपस्थिति में भी अनुकूल फैसला हुआ।

इंदौर, कांगड़ा के चौ० अमरसिंह एक ऐसी जगह बीमार पड़े, जहाँ की जलवायु बड़ी खराब थी और वहाँ कोई चिकित्सक भी खोजने से न मिलता था। उस भयंकर बीमारी में गायत्री प्रार्थना को उन्होंने ओषधि बनाया और अच्छे हो गए।

बंबई (मुंबई) के पं० रामकरण शर्मा जब गायत्री अनुष्ठान कर रहे थे, उन्हीं दिनों उनके माता-पिता सख्त बीमार हुए, परंतु अनुष्ठान के प्रभाव से उनका बाल भी बाँका न हुआ, दोनों ही नीरोग हो गए।

इऔआधुरा के डॉ० रामनरायणजी भटनागर को उनकी स्वर्गीया पत्नी ने स्वप्न में दर्शन देकर गायत्री-जप करने की शिक्षा दी थी। तब से वे बराबर इस साधना को कर रहे हैं। चिकित्सा क्षेत्र में उनके हाथ में ऐसा यश आया कि बड़े-बड़े कष्टसाध्य रोगी उनकी चिकित्सा से अच्छे हो गए।

कनकुवा हमीरपुर के श्री लक्ष्मीनारायणजी श्रीवास्तव बी० ए० एल० एल० बी० की धर्मपत्नी प्रसवकाल में अत्यंत कष्ट-पीड़ित हुआ करती थीं। एक बार उनका लड़का मोतीझरा से पीड़ित हुआ, बेहोशी और चीखने की दशा को देखकर सब लोग बड़े दुखी थे। वकील साहब की गायत्री प्रार्थना के द्वारा बालक को गहरी नींद आ गई और वह थोड़े ही दिनों में स्वस्थ हो गया।

जफरापुर के ठा० रामकरणसिंह जी वैद्य की धर्मपत्नी को दो वर्ष से संग्रहणी की बीमारी थी। अनेक चिकित्साएँ कराने

पर भी जब लाभ न हुआ, तो सवा लक्ष जप का अनुष्ठान किया गया। फलस्वरूप वह पूर्ण स्वस्थ हो गई और उनके एक पुत्र भी पैदा हुआ।

कसराबाद, निमाड़ के श्रीशंकरलाल व्यास का बालक इतना बीमार था कि डॉक्टर-वैद्यों ने आशा छोड़ दी थी। दस हजार गायत्री जप के प्रभाव से वह अच्छा हुआ। एक बार व्यास जी रास्ता भूलकर रात के समय ऐसे पहाड़ी बीहड़ जंगल में फँस गए थे, जहाँ हिंसक जानवर चारों ओर शब्द करते हुए घूम रहे थे। इस संकट के समय में उन्होंने गायत्री का ध्यान किया और उनके प्राण बच गए।

विहिया, शाहाबाद के श्री गुरुचरण आर्य एक अभियोग में जेल भेजे गए। छुटकारे के लिए वे जेल में जप करते रहते, वे अचानक जेल से छूट गए और मुकदमे से निर्दोष बरी हुए।

मुंद्रावजा के श्री प्रकाशनारायण मिश्र कक्षा १०वीं की पढ़ाई में पारिवारिक कठिनाइयों के कारण ध्यान न दे सके। परीक्षा के २५ दिन रह गए, तब उन्होंने पढ़ना और गायत्री का जप करना आरंभ किया। उत्तीर्ण होने की आशा न थी फिर भी उन्हें सफलता मिली। मिश्र जी के बाबा शत्रुओं के एक ऐसे कुचक्र में फँस गए थे कि जेल जाना पड़ता, लेकिन गायत्री अनुष्ठान के कारण वे उस आपत्ति से बच गए।

काशी के पं० धरणीदत्त शास्त्री का कथन है कि उनके दादा पं० कन्हैयालाल जी गायत्री के उपासक थे। बचपन में शास्त्री जी अपने दादा के साथ रात के समय कुएँ पर पानी लेने गए। उन्होंने देखा कि वहाँ एक भयंकर प्रेतात्मा है, जो कभी भैंसा बनकर कभी शूकर बनकर उन पर आक्रमण करना चाहता है, वह कभी मुख से कभी सिर से भयंकर अग्नि-ज्वालाएँ

फेंकता था और कभी मनुष्य, कभी हिंसक जंतु बनकर एक-डेढ़ घंटे तक वह भयोत्पादन करता रहा। दादा ने मुझे डरा हुआ देखकर समझा दिया कि बेटा, हम गायत्री उपासक हैं, यह प्रेत हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अंत में वह दोनों सकुशल घर आ गए। प्रेत का क्रोध असफल रहा।

'सनाढ्य जीवन' इटावा के संपादक पं० प्रभुदयाल शर्मा का कथन है कि उनकी पुत्रवधू तथा नातियों को कोई दुष्ट प्रेतात्मा लग गई थी। हाथ, पैर और मस्तक में भारी पीड़ा होती थी और बेहोशी आ जाती थी। रोगमुक्ति के जब सब प्रयत्न असफल हुए तो गायत्री का आश्रय लेने से वह बाधा दूर हुई। इसी प्रकार शर्मा जी का भतीजा भी मृत्यु के मुख में अटका था। उसे गोदी में लेकर गायत्री का जप किया गया, बालक अच्छा हो गया।

शर्मा जी के ताऊजी दानापुर (पटना) गए हुए थे। वहाँ वे स्नान के बाद गायत्री का जप कर रहे थे कि अचानक उनके कान में बड़े जोर का शब्द हुआ कि "जल्दी निकल, भाग, यह मकान अभी गिरता है।" वे खिड़की से कूद कर भागे। मुश्किल से चार-छह कदम गए होंगे कि मकान गिर पड़ा। वे बाल-बाल बच गए।

शेखूपुरा के अमोलचंद गुप्ता बचपन में ही पिता की और किशोरावस्था में ही माता की मृत्यु हो जाने पर कुसंग में पड़कर अनेक बुरी आदतों में फँस गए। दोस्तों की चौकड़ी दिनभर जमी रहती और ताश, शतरंज, गाना, बजाना, वेश्यागमन, सिगरेट, शराब, जुआ, व्यभिचार, नाच-तमाशा, सैर-सपाटा, भोजन, पार्टी आदि के दौर चलते रहते। इसी कुचक्र में पाँच वर्ष के भीतर नकदी, जेवर, मकान और बीस हजार की जायदाद स्वाहा हो गई। जब कुछ न रहा तो जुए के अड्डे, व्यभिचार की दलाली, चोरी, जेबकटी, लूट, धोखाधड़ी आदि की नई-नई तरकीबें निकालकर एक छोटे

गिरोह के साथ अपना गुजारा करने लगे। इस स्थिति में उनका चित्त बड़ा अशांत रहता। एक दिन एक महात्मा ने उन्हें गायत्री जप का उपदेश दिया, उनकी श्रद्धा जम गई। धीरे-धीरे उत्तम विचारों की वृद्धि हुई। पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त की भावना बढ़ने से उन्होंने कई चांद्रायण व्रत, तीर्थयात्रा, अनुष्ठान और प्रायश्चित्त किए। वे एक दुकान करके अपना गुजारा करने लगे और पुरानी बुरी आदतों से मुक्त हुए।

रानीपुरा के ठा० जंगजीत सिंह राठौर एक डकैती के केस में फँस गए थे। जेल में वे गायत्री जप करते रहते थे। मुकदमे में निर्दोष छुटकारा पाया।

अंबाला के मोतीलाल माहेश्वरी का लड़का कुसंग में पड़कर ऐसी बुरी आदतों का शिकार हो गया था, जिससे उनके प्रतिष्ठित परिवार पर कलंक के छींटे पड़ते थे। माहेश्वरी जी ने दुखी होकर गायत्री की शरण ली। उस तपश्चर्या के प्रभाव से लड़के की मति पलटी और अशांत परिवार में शांत वातावरण उत्पन्न हो गया।

टोंक के श्रीशिवनारायण श्रीवास्तव के पिताजी के मरने पर जमींदारी से दो हजार रुपया सालाना आमदनी पर गुजारा करने वाले १९ व्यक्ति रह गए। परिश्रम कोई कुछ न करता, पर खरच सब बढ़ाते और जमींदारी से माँगते। अत: वह घर फूट और कलह का अखाड़ा बन गया। फौजदारी और मुकदमेबाजी के आसार खड़े हो गए। माहेश्वरी जी को इससे बड़ा दु:ख होता क्योंकि वे पिताजी के उत्तराधिकारी गृहपति थे। दुखी होकर एक महात्मा के आदेशानुसार उन्होंने गायत्री जप आरंभ किया। परिस्थिति बदली, बुद्धियों में सुधार हुआ। कमाने लायक लोग नौकरी तथा व्यापार में लग गए। झगड़े शांत हुए। डगमगाता हुआ घर बिगड़ने से बच गया।

अमरावती के सोहनलाल मेहरोत्रा की स्त्री को भूत-व्याधा बनी रहती थी। बड़ा कष्ट था, हजारों रुपया खरच हो चुके थे। स्त्री दिन-दिन घुलती जाती थी। एक दिन महरोत्रा जी से स्वप्न में उनके पिताजी ने कहा—"बेटा! गायत्री का जप कर, सब विपत्ति दूर हो जाएगी।" दूसरे दिन से उन्होंने वैसा ही किया। फलस्वरूप भूत उपद्रव शांत हो गए और स्त्री नीरोग हो गई। उनकी बहन की ननद भी इसी उपाय से भूत-व्याधा से मुक्त हुई।

चाचीड़ा के डॉक्टर भगवानस्वरूप की स्त्री प्रेतव्याधा में मरणासन्न स्थिति तक पहुँच गई थी। उनकी प्राण-रक्षा भी एक गायत्री उपासक के प्रयत्न से हुई।

विझौली के बाबा उमाशंकर खरे के परिवार से गाँव के जाटों के साथ पुस्तैनी दुश्मनी थी। उस रंजिश के कारण कई बार खरे जी के यहाँ डकैतियाँ हो चुकी थीं और बड़े-बड़े नुकसान हुए थे। सदा ही जान-जोखिम का अंदेशा रहता था। खरे जी ने गायत्री भक्ति का मार्ग अपनाया। उनके मधुर व्यवहार ने अपने परिवार को शांत स्वभाव और गाँव को नरम बना लिया। फलस्वरूप पुराना बैर समाप्त होकर नई सद्भावना कायम हुई है। सब लोग बड़े प्रेम से रहने लगे हैं।

खड़गपुर के श्री गोकुलचंद सक्सेना रेलवे के लोको दफ्तर में कर्मचारी थे। उनके दफ्तर के ऊँचे औहदे के कर्मचारी उनसे द्वेष करते थे और षड्यंत्र करके उनकी नौकरी छुड़ाना चाहते थे। उनके अनेकों हमले विफल हुए। सक्सेना जी का विश्वास है कि गायत्री उनकी रक्षा करती है और उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

बंबई (मुंबई) के श्री मानिकचंद पाचौटिया व्यापारिक घाटे के कारण काफी रुपये के कर्जदार हो गए थे। कर्ज चुकाने की कोई

व्यवस्था हो नहीं पाती थी कि सट्टे में और भी नुकसान हो गया, दिवालिया होकर अपनी प्रतिष्ठा खोने और भविष्य में दुखी जीवन बिताने के लक्षण स्पष्ट रूप से सामने थे। विपत्ति में अपनी सहायता के लिए उन्होंने गायत्री-अनुष्ठान कराया। समय कुछ ऐसा फिरा कि दिन-दिन लाभ होने लगा। रूई और चाँदी के कई चान्स अच्छे आ गए, जिनमें सारा कर्ज चुक गया, गिरा हुआ व्यापार फिर चमकने लगा।

दिल्ली के प्रसिद्ध पहलवान गोपाल विश्नोई कोई बड़ी कुश्ती लड़ने जाते थे, तो पहले गायत्री पुरश्चरण कराते थे। वह प्रायः सदा ही विजयी होकर लौटते थे।

बाँसवाड़ा के श्री सीताराम मालवीय को क्षय रोग हो गया था। एक्सरा होने पर डॉक्टरों ने उनके फेफड़े खराब हो गए बताए थे। दशा निराशाजनक थी। सैकड़ों रुपये की दवाएँ खा लेने पर भी जब कुछ आराम न हुआ तो एक विद्वान वयोवृद्ध के आदेशानुसार उन्होंने चारपाई पर पड़े-पड़े गायत्री का जप आरंभ कर दिया और मन-ही-मन प्रतिज्ञा की कि यदि मैं बच गया तो अपना जीवन देशहित में लगा दूँगा। प्रभु की कृपा से वे बच गए। धीरे-धीरे स्वास्थ्य सुधरा और बिलकुल भले-चंगे हो गए। तब से वे आदिवासियों, भीलों तथा पिछड़ी हुई जातियों के लोगों की सेवा में लग गए।

थरपारकर के लाला करनदास का लड़का बहुत ही दुर्बल, पतला और कमजोर था, आएदिन बीमार पड़ा रहता था। आयु १९ वर्ष की हो चुकी थी, पर देखने में १३ वर्ष से अधिक न मालूम पड़ता था। लड़के को उनके कुलगुरु ने गायत्री की उपासना का उपदेश दिया। उसका मन इस ओर लग गया। एक-एक करके उसकी बीमारियाँ छूट गईं। कसरत करने

लगा, खाना भी हजम होने लगा। दो-तीन वर्ष में उसका शरीर ड्यौढ़ा हो गया और घर का सब काम-काज़ होशियारी के साथ सँभालने लगा।

श्रीनारायणदास कश्यप राजनाँद गाँव वालों के एक बड़े भाई पर कुछ लोगों ने मिलकर एक फौजदारी मुकदमा चलाया। वह भारी मुकदमा ४ वर्ष तक चला। इस प्रकार उनके छोटे भाई पर कत्ल करने का अभियोग भी लगाया गया। इन लोगों ने गायत्री माता का आँचल पकड़ा और दोनों मुकदमों में से उन्हें निर्दोष छुटकारा मिला।

स्वामी योगानंद जी संन्यासी को कुछ म्लेच्छ अकारण बहुत सताते थे। उन्हें गायत्री का आग्नेयास्त्र सिद्ध था। उसका प्रयोग उन्होंने उन म्लेच्छों पर किया तो उनके शरीर ऐसे जलने लगे मानो किसी ने अग्नि लगा दी है। वे मरणतुल्य कष्ट से छटपटाने लगे। तब लोगों की प्रार्थना पर स्वामी जी ने उस अंतर्दाह को शांत किया, इसके बाद वे सदा के लिए सीधे हो गए।

चंदनपुरवा के सत्यनारायण जी एक अच्छे गायत्री उपासक हैं। इन्हें अकारण सताने वाले गुंडों पर ऐसा वज्रपात हुआ कि एक भाई २४ घंटे के अंदर हैजे से मर गया और शेष भाइयों को पुलिस डकैती के अभियोग में पकड़ ले गई। उनको पाँच-पाँच वर्ष की जेल काटनी पड़ी।

इस प्रकार ऐसे अनेक प्रमाण मौजूद हैं, जिनमें यह प्रकट होता है कि गायत्री माता का आँचल श्रद्धापूर्वक पकड़ने से मनुष्य अनेक प्रकार की आपत्तियों से सहज ही छुटकारा पा सकता है। अनिवार्य कर्म, भोगों एवं कठोर प्रारब्ध में भी कई बार आश्चर्यजनक सुधार होते देखे गए हैं।

गायत्री उपासना का मूल लाभ आत्मशांति है। इस महामंत्र के प्रभाव से आत्मा में सतोगुण बढ़ता है और अनेक प्रकार की आत्मिक समृद्धियाँ बढ़ती हैं, साथ ही अनेक प्रकार के सांसारिक लाभ भी मिल जाते हैं, जिन्हें उपासना का गौण लाभ समझा जाता है।